अमर चित्र कथा

गरुड़

संख्या ५४७ | ₹ 60



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिककथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास–परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

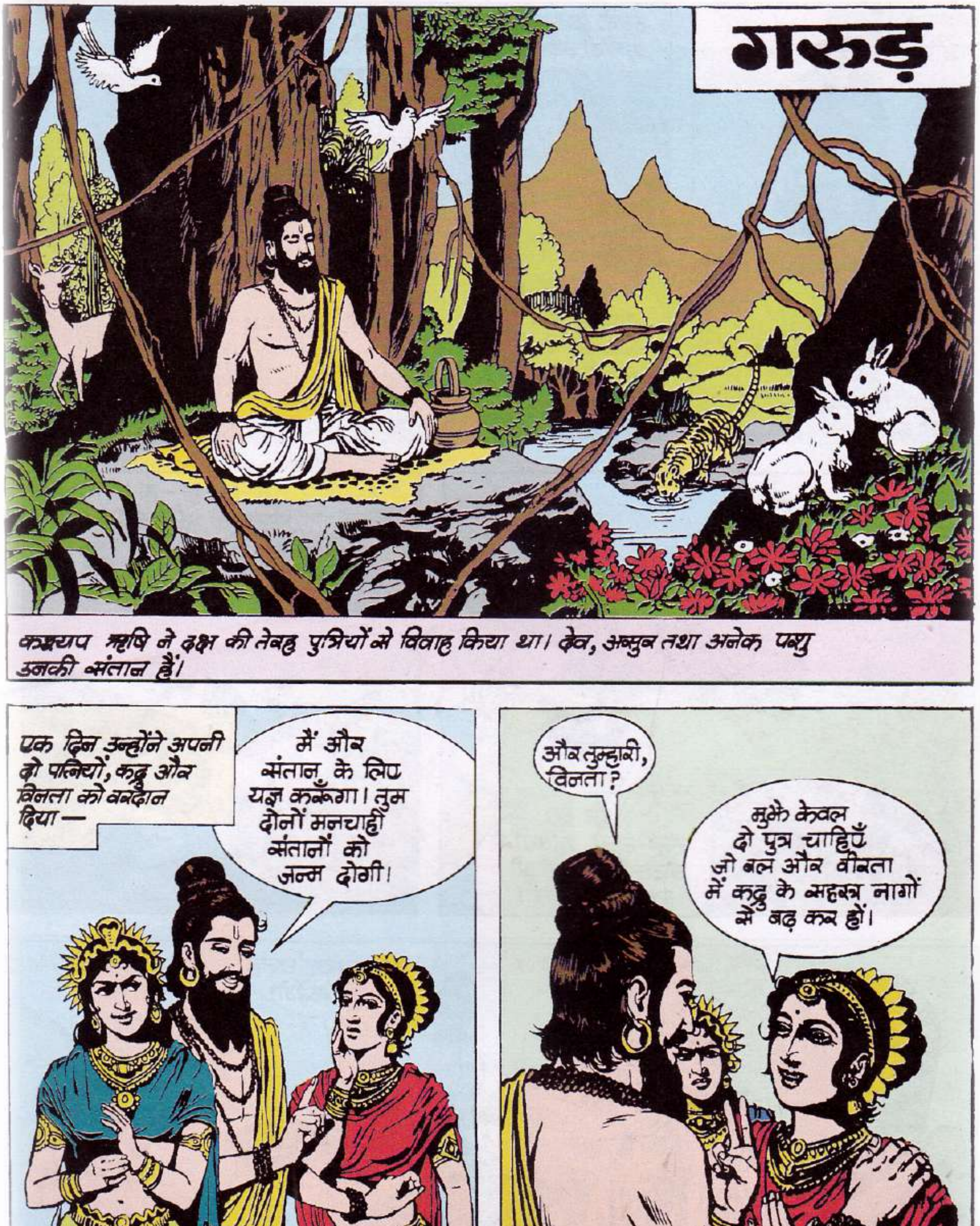
कथा	चित्र	संपादक
कमला चंन्द्रकांत	सी.एम.विटणकर	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1977, Reprinted December 2017,
ISBN 978-81-8482-328-8
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., AFL House, 7th Floor,
Lok Bharati Complex,Marol Maroshi Road, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
Printed at Zirius Images Pvt. Ltd, Bhiwandi, Thane - 421 311.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

Distributed exclusively by The Variety Book Depot
M 3, Connaught Place (Middle Circle),
New Delhi 11000177

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.


गरुड़
कश्यप ऋषि ने दक्ष की तेरह पुत्रियों से विवाह किया था। देव, असुर तथा अनेक पशु उनकी संतान हैं।
एक दिन उन्होंने अपनी दो पत्नियों, कद्रु और विनता को वरदान दिया —
मैं और संतान के लिए यज्ञ करूँगा। तुम दोनों मनचाही संतानों को जन्म दोगी।
मेरी इच्छा है कि एक सहस्त्र शक्तिशाली नाग मेरी कोख से जन्म लें।
और तुम्हारी, विनता?
मुझे केवल दो पुत्र चाहिएँ जो बल और वीरता में कद्रु के सहस्त्र नागों से बढ़ कर हों।


तथास्तु!
कश्यप ऋषि यज्ञ की तैयारी करने लगे।
उनके पुत्र, देवराज इंद्र उनका हाथ बँटाने के लिए लघुकाय वालखिल्य ऋषियों तथा अन्य देवताओं को ले कर आये।
ऋषियों के साथ जा कर यज्ञ की अग्नि के लिए लकड़ी ले आओ।
कुछ देर में इंद्र बड़ा-सा लट्ठा उठाये हुए वायु-मार्ग से आये —
इन नन्हे-मुन्ने ऋषियों से छोटी-सी टहनी भी उठाये नहीं उठती!
हा-हा-हा! हो-हो-हो!
हम इसका घमंड चूर करेंगे!


अतः जब घी की आहुति पड़ने पर यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित हुई —
हमारे तप से एक और इंद्र का जन्म हो जो वर्तमान इंद्र से अधिक बलवान् हो!
उसमें ऐसी शक्ति हो कि जहाँ चाहे वहाँ विचरण करे, मनचाहा बल प्राप्त करे और मनचाहा रूप धारण करे।
पिता जी ही ऋषियों को फिर से प्रसन्न कर सकते हैं।
परमपूज्य, मुझे ऋषियों के क्रोध से बचाइए!
सारी बात सुन कर कश्यप ऋषि उन ऋषियों से बोले —
मुनिगण, इस इंद्र को ब्रह्मा जी ने स्वर्ग का स्वामी बनाया है। तुम अपने इंद्र को उड़ने वाले जीवों का स्वामी बनाओ। यह तुम्हारे सामने नत-मस्तक है। इस पर कृपा करो।


महर्षि प्रसन्न हुए।
तथास्तु! तुमने संतान के लिए यज्ञ किया है। हमारे कर्मों का फल स्वीकार करो।
कश्यप यज्ञ कर के कद्रु और विनता के पास लौटे।
तुम्हें अब इच्छानुसार संतान की प्राप्ति होगी।
कश्यप तप करने के लिए वापस जंगल में चले गये।
कुछ महीनों बाद विनता ने दो और कद्रु ने एक हज़ार अंडे दिये।
इन्हें अलग-अलग गर्म घड़ों में रखें।
कई वर्ष दोनों ने अंडों से बच्चे निकलने की राह देखी। तब एक दिन—
विनता, आओ, देखो! मेरे पुत्र अंडे फोड़ कर निकल आये!

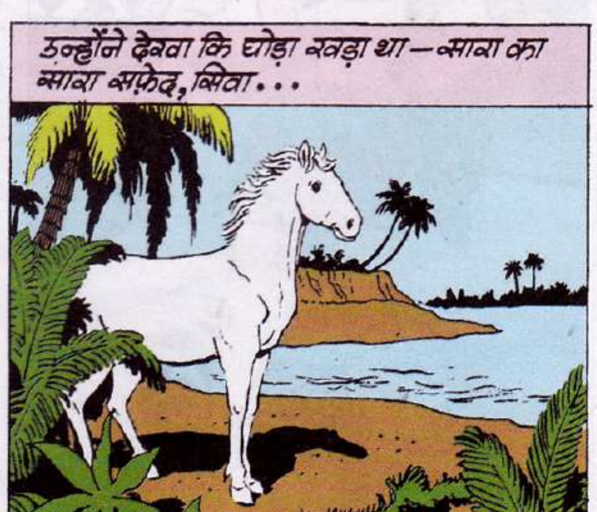

और मेरे?
मै क्या जानूँ?
विनता के मन में पहली बार ईर्ष्या पैदा हुई। वह अधीर हो उठी।
एक अंडा मैं ही फोड़ूँ, शायद मेरे पुत्रों को सहायता चाहिए।
उसने एक अंडा फोड़ा और यह देख कर काँप उठी कि उसके पुत्र का अधोभाग माँस का लोथड़ा मात्र था।
यह क्या किया मैंने!
बालक बुरा - भला कहने लगा —
तुम अपनी अधीरता का फल भोगोगी। तुम्हें दासता करनी पड़ेगी। तथापि दूसरे अंडे के प्रति धीरज रखो तो मेरा भाई तुम्हें दासता से मुक्ति दिला देगा।


फिर बालक आकाश में उड़ गया और सूर्यदेव का सारथी बना।
मत जाओ, पुत्र,लौट आओ।
कुछ दिनों बाद विनता और कद्रु घूमने निकलीं तो उन्होंने दैवी घोड़े उच्चैःश्रवा को आकाश-मार्ग से जाते देखा।
विनता, जल्दी बताओ, घोड़ा किस रंग का है?
पूरा सफेद। न हो तो जो कहो हार जाऊँ।
मुझे पूँछ काली लगती है। मैं अपनी स्वतंत्रता हारने को तैयार हूँ। हम में से जो हारेगी वह दूसरी की दासी होकर रहेगी।
हम कल जा कर घोड़ा देख लेंगी। आज तो घर चलें।
कद्रु शर्त लगा कर सोच में पड़ गयी—
कहीं मुझे भ्रम तो नहीं हुआ था? मुझे विनता की दासी बनना पड़ेगा! नहीं! पूँछ काली न हो, तो भी मैं ऐसा करूँगी कि काली दिखे।


घर पहुँच कर कद्रू ने अपने हज़ार बेटों से कहा —
जा कर घोड़े की पूँछ को ढक लो ताकि वह काली दिखे। मुझे दासी नहीं बनना है।

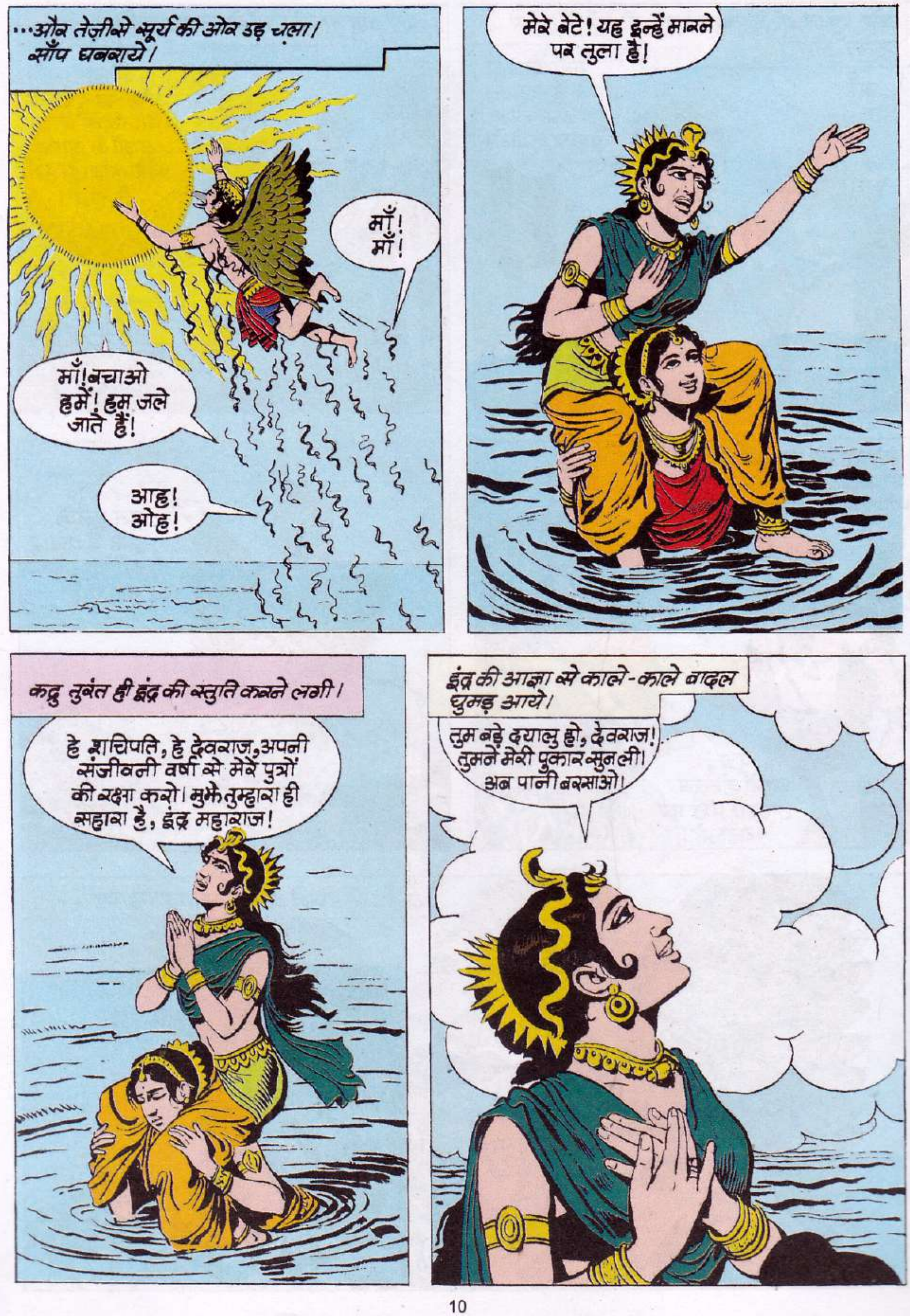

माँ का कहा करना होगा।
करना ही ठीक है। हम पर कृपा हो जायेगी उसकी।
न किया तो वह हमें जला कर भस्म कर देगी।
वे माँ की आज्ञा पूरी करने को चल पड़े।


अगले दिन विनता और कद्रू घोड़े को देखने सागर के पार गयीं।


उन्होंने देखा कि घोड़ा खड़ा था — सारा का सारा सफ़ेद, सिवा . . .


...पूँछ के जिसके बाल काले थे। विनता ने आँखें मल-मल कर देखा —
नहीं ऐसी भूल नहीं हो सकती मुझसे!
तुम्हें शर्त लगाने से पहले अच्छी तरह देखना चाहिए था। अब तुम मेरी दासी हो। मेरी सेवा करनी होगी।
इस बीच घर पर विनता का दूसरा पुत्र अंडा फोड़ कर निकल आया।
शरीर को छोटा-बड़ा करने की शक्ति उसे प्राप्त थी।
वह बड़ा आकार बना कर सागर के पार उड़ चला —


और पहुँचा माँ के पास। विनता की आँखें हर्ष से छलक आयीं।
माँ !
मेरे बेटे, बड़ी शक्ति है तुममें। तुम मेरा बोझ हल्का करोगे।
तभी कद्रु अपने पुत्रों के साथ आयी।
विनता, मुझे और मेरे पुत्रों को सागर के बीच, नागों के आनंद प्रदेश जाना है। हमें ले चलो।
विनता ने कद्रु को अपने कंधे पर बिठाया और अपने पुत्र से बोली —
पुत्र, नागों को तुम अपनी पीठ पर चढ़ाओ।
वह चक्कर में पड़ गया।
हम इनके दास हैं क्या? माँ क्यों यह अपमान सहती है।
क्रोध में उसने अपना आकर बढ़ाया...

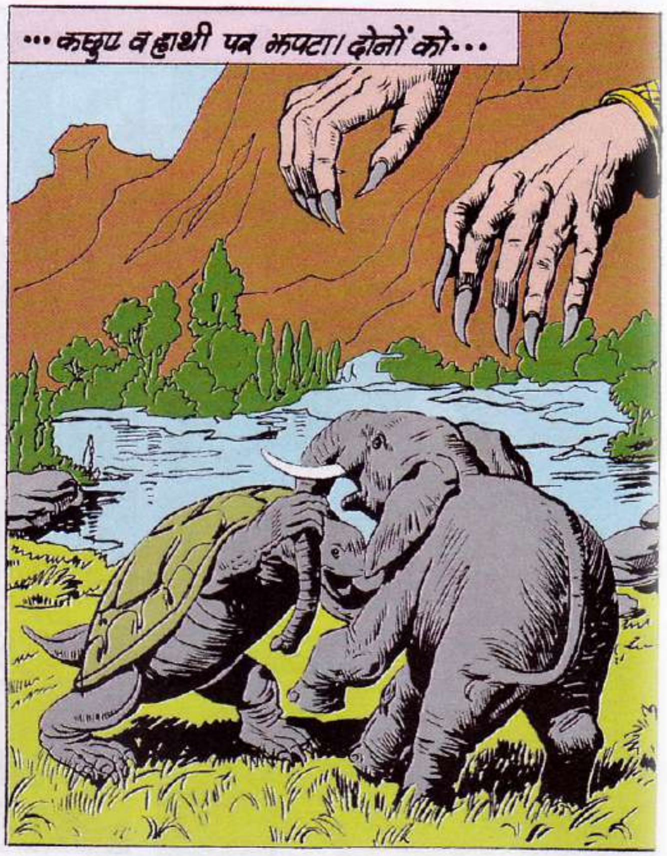

...और तेज़ी से सूर्य की ओर उड़ चला। साँप घबराये।
माँ! माँ!
माँ! बचाओ हमें! हम जले जाते हैं!
आह! ओह!
मेरे बेटे! यह इन्हें मारने पर तुला है!
कद्रू तुरंत ही इंद्र की स्तुति करने लगी।
हे शचिपति, हे देवराज, अपनी संजीवनी वर्षा से मेरे पुत्रों की रक्षा करो। मुझे तुम्हारा ही सहारा है, इंद्र महाराज!
इंद्र की आज्ञा से काले-काले बादल घुमड़ आये।
तुम बड़े दयालु हो, देवराज! तुमने मेरी पुकार सुन ली। अब पानी बरसाओ।

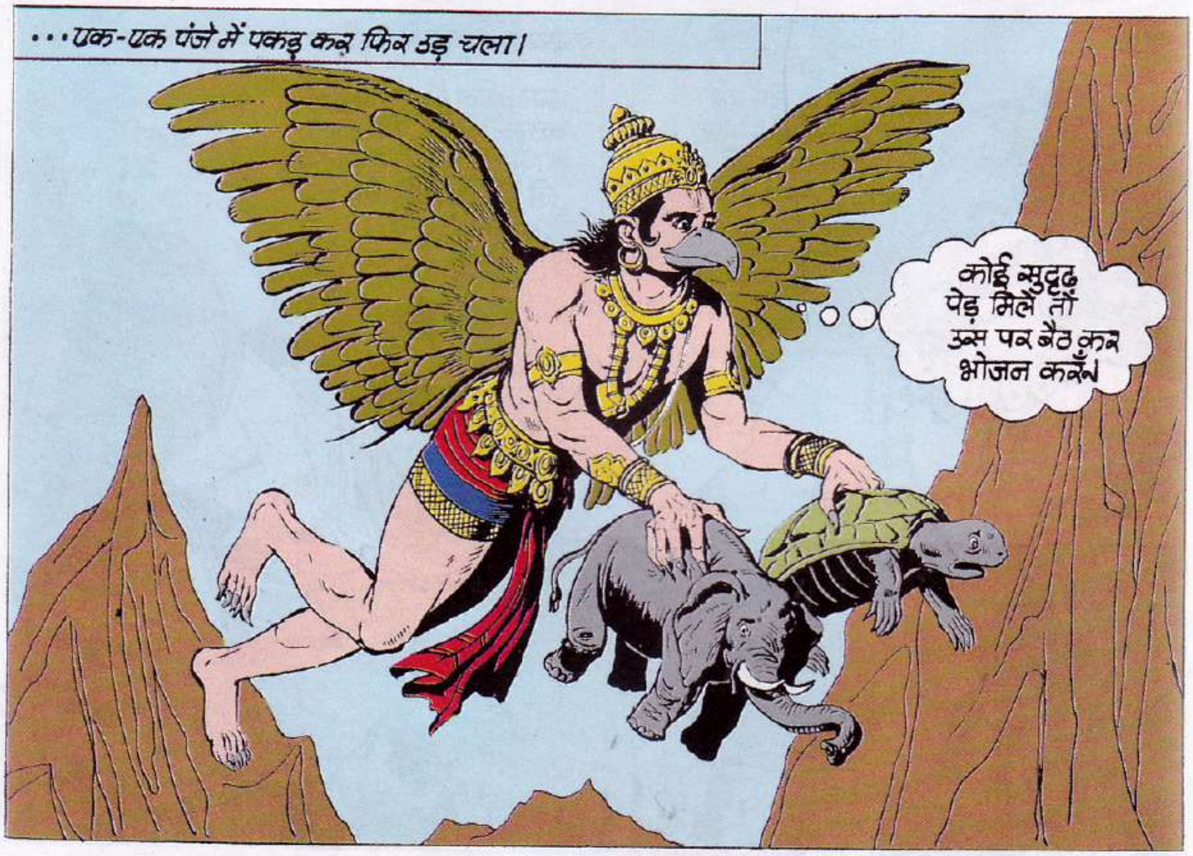

इंद्र ने इनकी सहायता की। अब इन्हें द्वीप पर पहुँचा देना चाहिए।
कद्रु की जान में जान आयी।
विनता के पुत्र को उतरना ही पड़ा। मेरे बेटे बच गये।
विनता, मुझे जल्दी द्वीप पर पहुँचाओ। वहीं हमारे पुत्र आयेंगे।
फिर, द्वीप पर —
पुत्रो, तुम सब आ गये! चलो, द्वीप की सैर करें।
माँ, ये नाग हम पर हुक्म क्यों चलाते हैं?
मैं इनकी धोखाधड़ी में फँस गयी। तुम्हारे जन्म से पहले —
विनता ने शर्त और शर्त हारनेकी बात उसे बतायी।

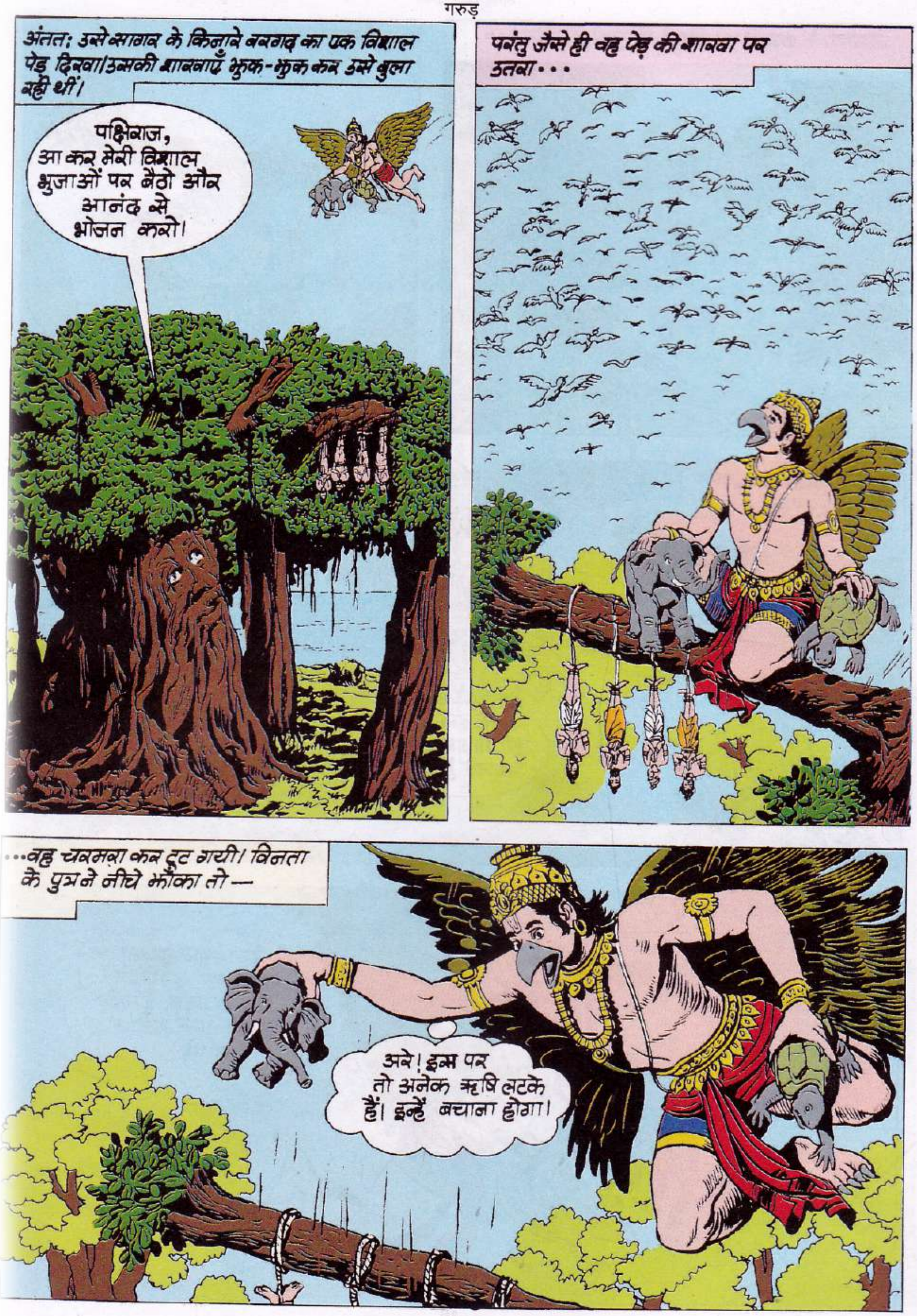

तब विनता का बलवान् पुत्र नागों के पास पहुँचा।
हमें स्वाधीनता वापस चाहिए— किसी भी मोल पर।
हमें अमृत ला दो, तो मुक्त कर देंगे।
विनता ने यह सुना तो—
जाओ, पुत्र, सफलता तुम्हारे चरण चूमे। देवता तुम्हारी रक्षा करें।
विनता के पुत्र ने पंख फैलाये...
...और उड़ चला।

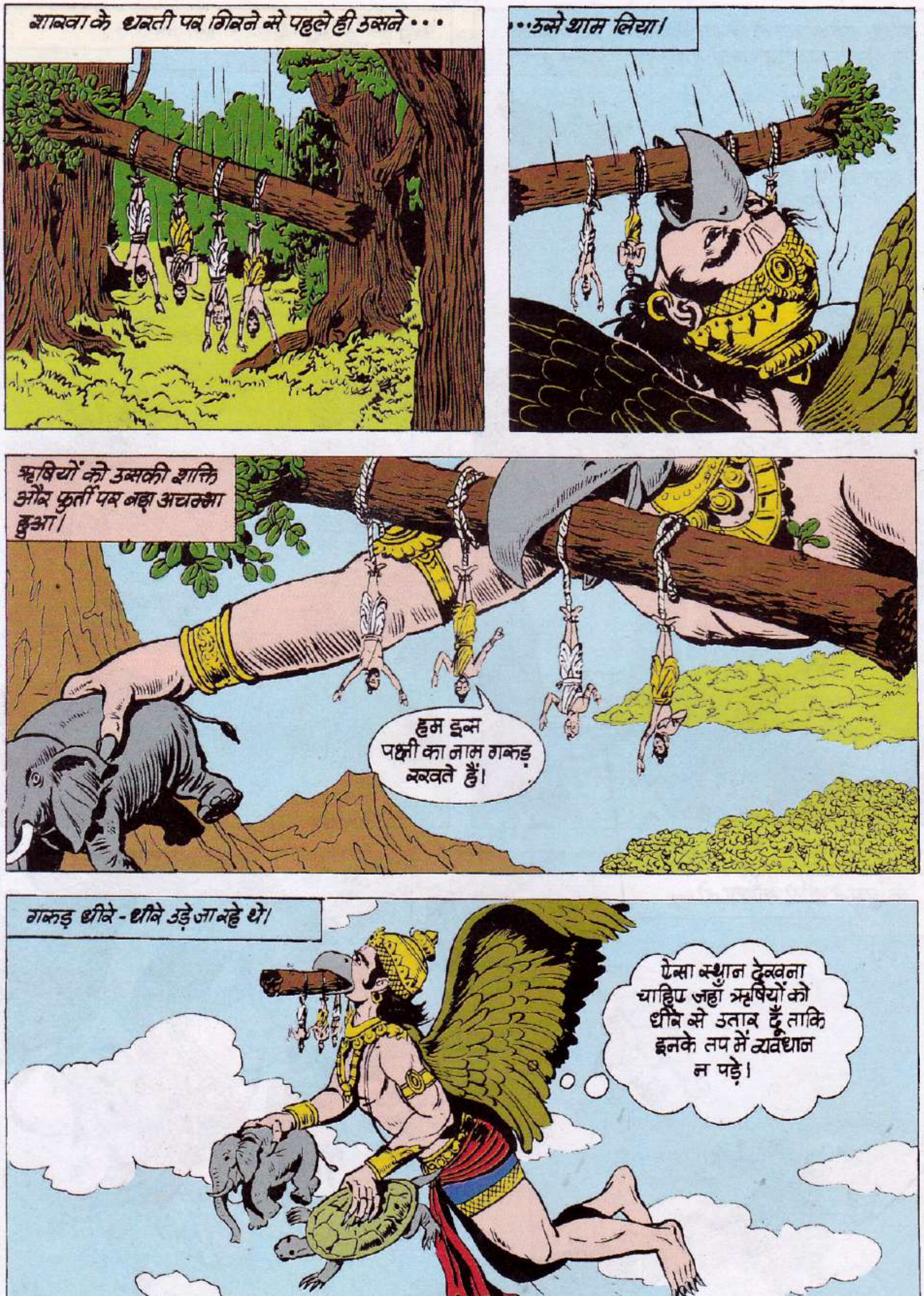

वह देवलोक की ओर उड़ा जा रहा था कि किसीने उसे पुकारा —
पुत्र, तुम कैसे हो? तुम्हारी माता कैसी हैं?
वे कश्यप ऋषि थे।
सब कुशल है। मैं, हम दोनों की स्वतंत्रता के लिए, अमृत लाने जा रहा हूँ।
पिताजी, मेरी शक्ति बढ़े इसके लिए पर्याप्त भोजन कहाँ मिलेगा?
कश्यप ने दूर झील दिखा कर कहा —
उस झील में एक बड़ा-सा कछुआ और एक हाथी आपस में मरने-मारने पर तुले हुए हैं। उन्हें खा कर तुम आगे जाना।
अच्छी बात है, पिता जी।


विनता का पुत्र झील पर गया
और...

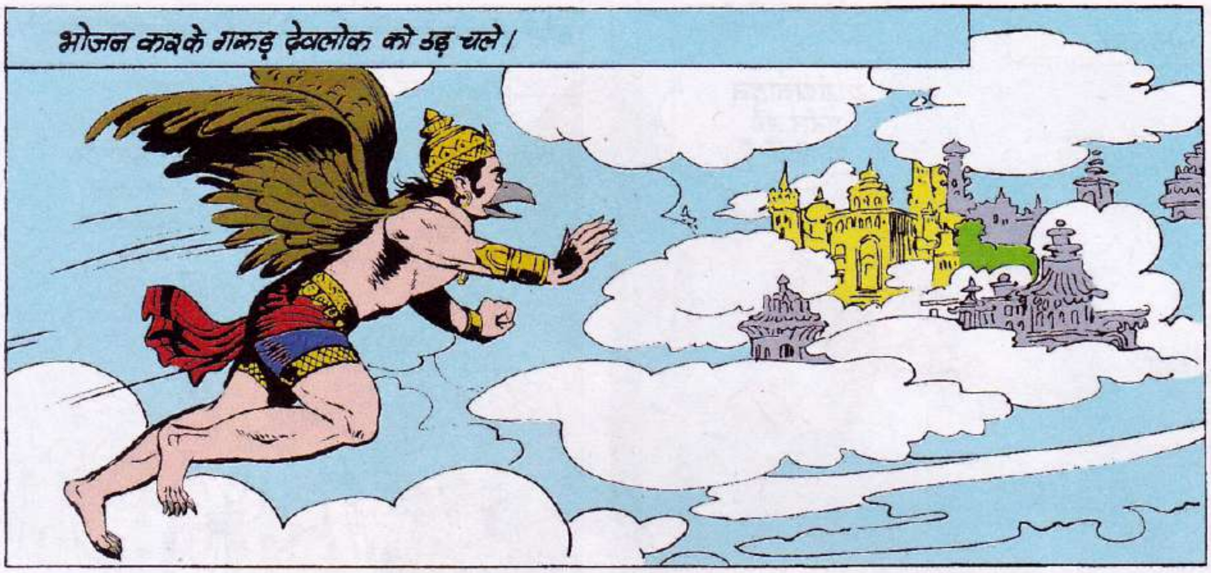

...कछुए व हाथी पर झपटा। दोनों को...

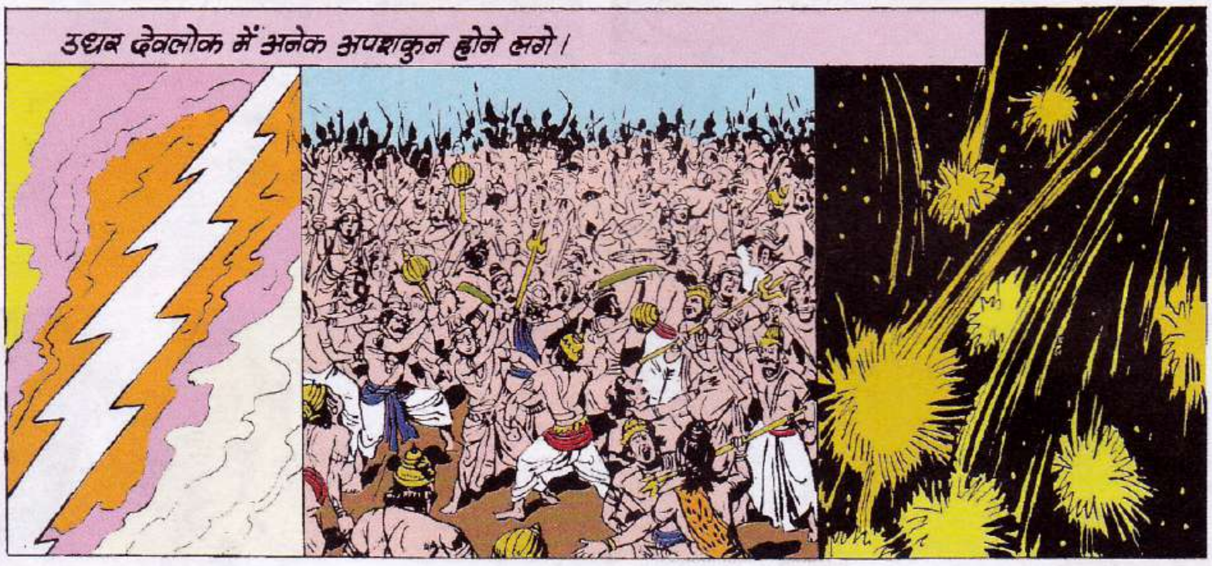

...एक-एक पंजे में पकड़ कर फिर उड़ चला।
कोई सुदृढ़ पेड़ मिले तो उस पर बैठ कर भोजन करूँ

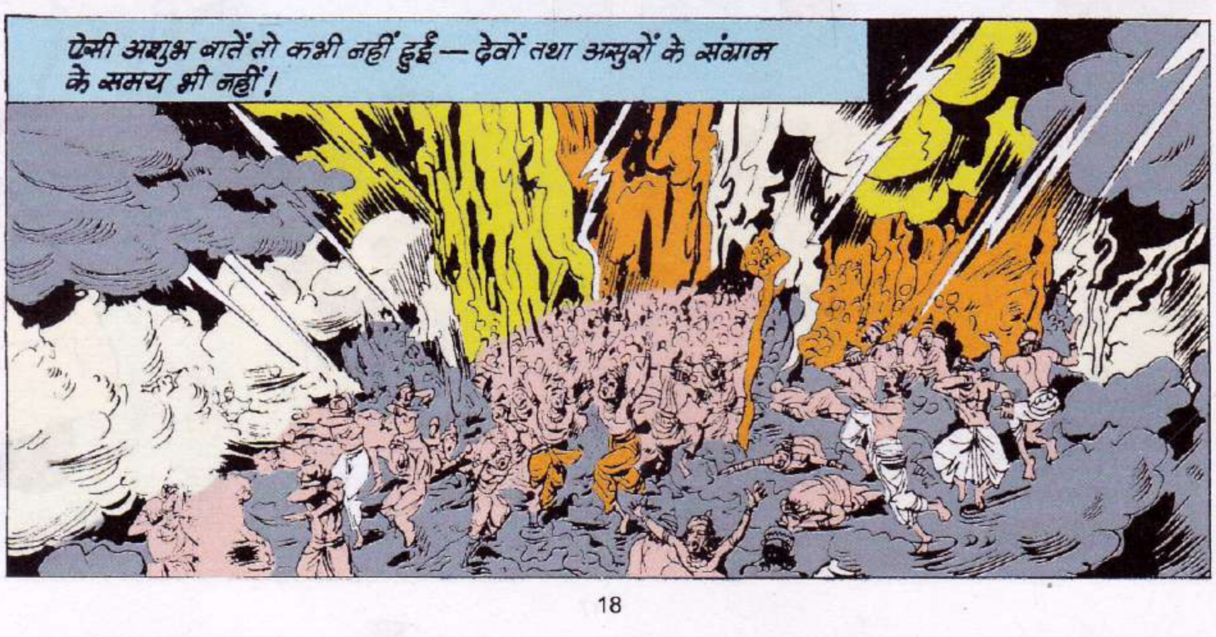

अंतत: उसे सागर के किनारे बरगद का एक विशाल पेड़ दिखा। उसकी शाखाएँ झुक-झुक कर उसे बुला रही थीं।
पक्षिराज, आ कर मेरी विशाल भुजाओं पर बैठो और आनंद से भोजन करो।
परंतु जैसे ही वह पेड़ की शाखा पर उतरा • • •
• • • वह चरमरा कर टूट गयी। विनता के पुत्र ने नीचे झाँका तो —
अरे! इस पर तो अनेक ऋषि लटके हैं। इन्हें बचाना होगा।


शाखा के धरती पर गिरने से पहले ही उसने • • •
• • उसे थाम लिया।
ऋषियों को उसकी शक्ति और फुर्ती पर बड़ा अचम्भा हुआ।
हम इस पक्षी का नाम गरुड़ रखते हैं।
गरुड़ धीरे - धीरे उड़े जा रहे थे।
ऐसा स्थान देखना चाहिए जहाँ ऋषियों को धीरे से उतार दूँ ताकि इनके तप में व्यवधान न पड़े।

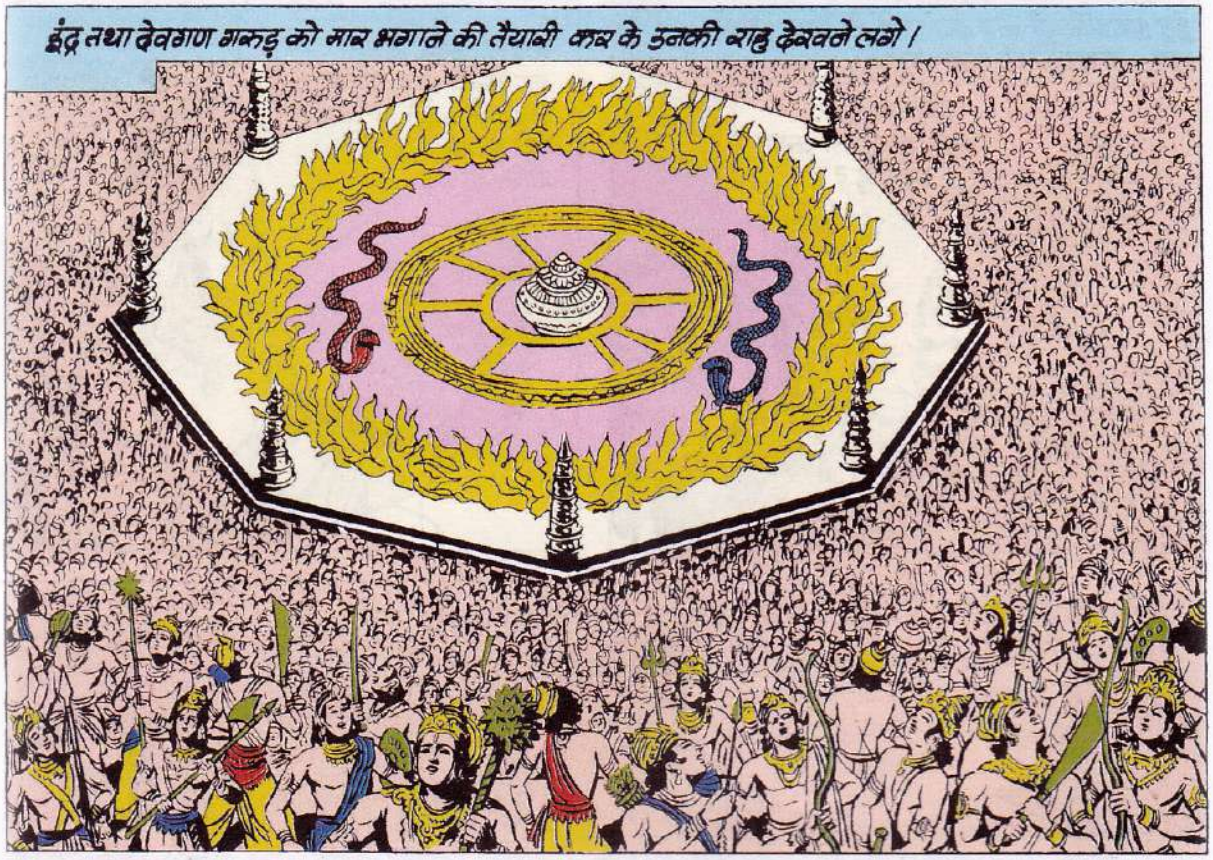

अचानक —
अरे, ये गंधमादन पर्वत की चोटियाँ हैं।
जैसे ही गरुड़ पर्वत पर उतरे, ऋषि शाखा से उतर पड़े।
हम हिमालय में जा कर तपस्या करेंगे।
गरुड़ फिर उड़ चले और शाखा को उन्होंने एक निर्जन पर्वत पर डाल दिया।
अब मैं पर्वत पर बैठ कर भोजन कर लूँ।


भोजन करके गरुड़ देवलोक को उड़ चले।


उधर देवलोक में अनेक अपशकुन होने लगे।


ऐसी अशुभ बातें तो कभी नहीं हुईं — देवों तथा असुरों के संग्राम
के समय भी नहीं!


इंद्र भयभीत हो कर देवताओं के साथ अपने गुरु, बृहस्पति के पास गये।
गुरुदेव, इन अपशकुनों का क्या अर्थ है?
कश्यप और विनता का अजेय पुत्र, गरुड़ अमृत ले जाने को आ रहा है। उसमें इतनी शक्ति भी है!
इंद्र बृहस्पति से विदा ले कर अमृत के रखवालों को सावधान करने गये।
एक विशालकाय और बलवान् पक्षी हमारा अमृत चुराने आ रहा है। उसे रोकना होगा।
इंद्र के सामने ही रखवालों के प्रमुख ने आज्ञा दी—
सब लोग कवच पहन लें और शस्त्र ले कर अग्नि के चारों ओर मोर्चा बाँध लें।


इंद्र तथा देवगण गरुड़ को मार भगाने की तैयारी कर के उनकी राह देखने लगे।

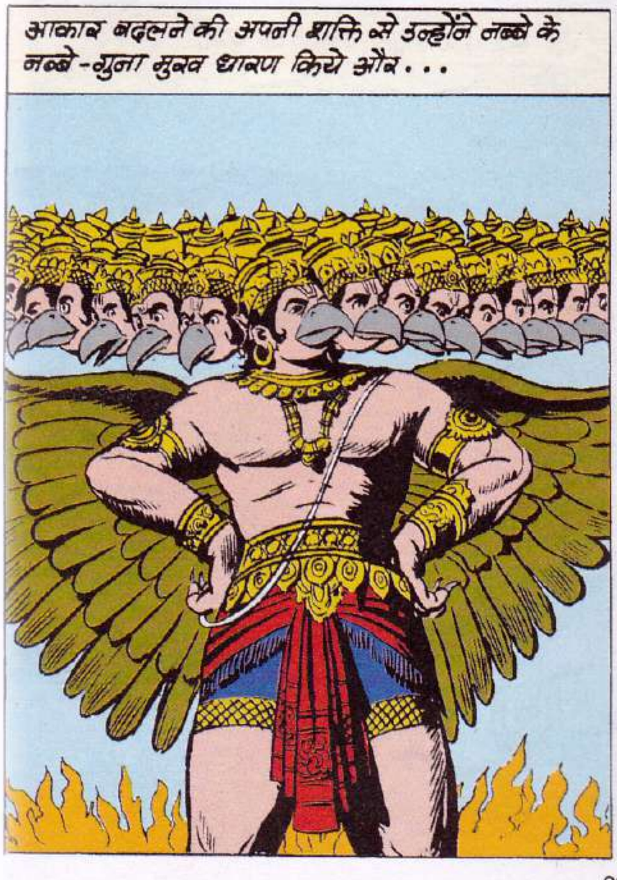

कुछ देर में वे आये। उनके पंखों के फड़फड़ाने से उड़ी धूल से आकाश ढक गया।
देवताओ, सामना करो इसका!
हमें तो कुछ दिखता ही नहीं!
धूल ने अंधा कर दिया है हमें!


इंद्र ने पवन देव को आज्ञा दी—
वायु, धूल की उड़ा कर आंधी रोको। तुम्हारे ही बस का है यह काम।
वायु ने श्वास लिया . . .
. . . और एक ही फूँक से सारी धूल उड़ा दी।
हाँ! वह रहा!
मारो!
एक पर भी न बचने पाये!
गरुड़ मंडरा रहे थे कि देवताओं ने दुधारी तलवारों, कीलों से जड़ी गदाओं, पैने भालों आदि से उन पर धावा कर दिया।


गरूड़ ने कुछ देर खेल-खेल में हथियारों को अपने शरीर पर लगने दिया।
फिर वे हुंकार कर के झपटे।


उनकी मार से घबरा कर देवता सिर पर पाँव रख कर भागे। सब के सब लहू में लथ-पथ थे।
गुरुदेव ने ठीक ही कहा था, यह पक्षी अजेय है!
भागने में ही भलाई है!
आह! ओह!

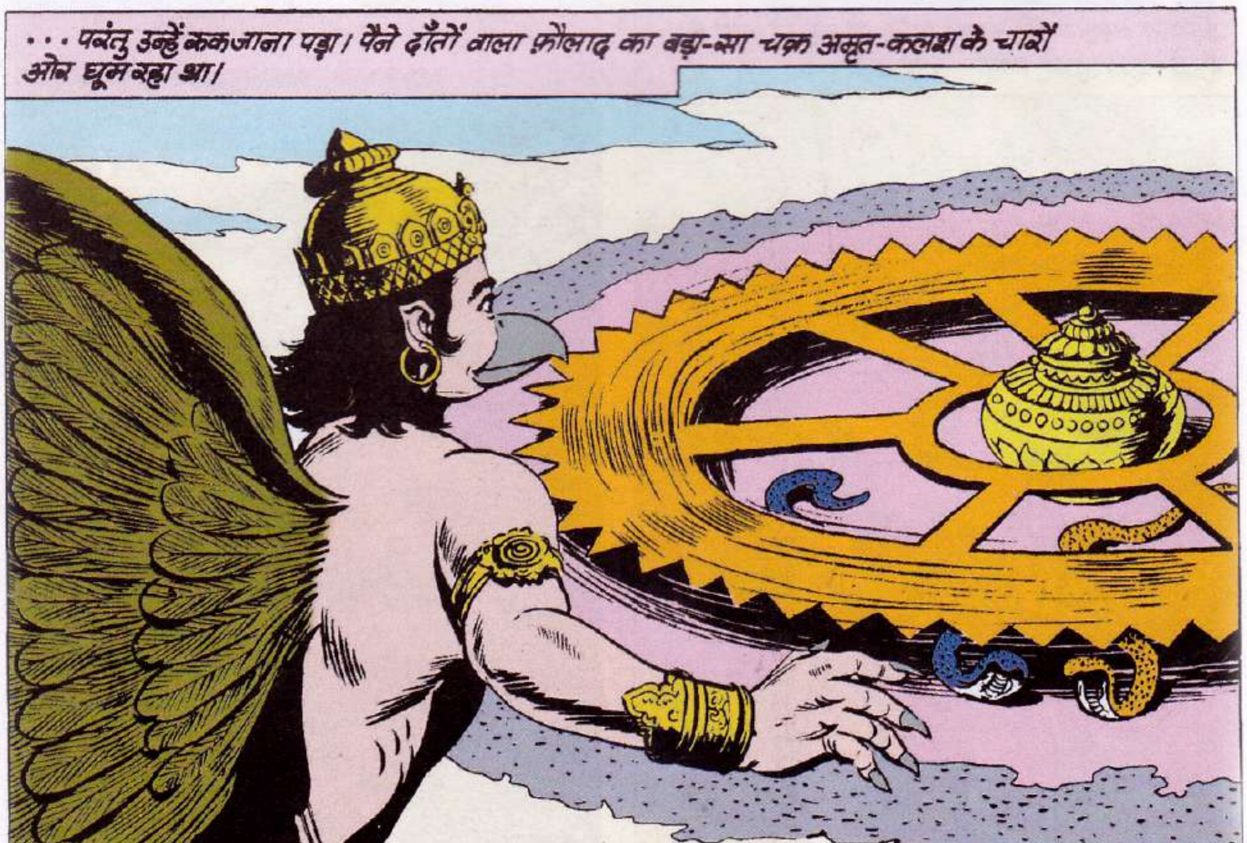

गरुड़ ने देवताओं को भगा दिया। अब सामने था अग्नि का घेरा जिसके बीच में अमृत का घट रखा था।
यह अग्नि तो मानो सूर्य को भी भस्म कर देगी! इसे बुझाये बिना मैं आगे नहीं बढ़ सकता।

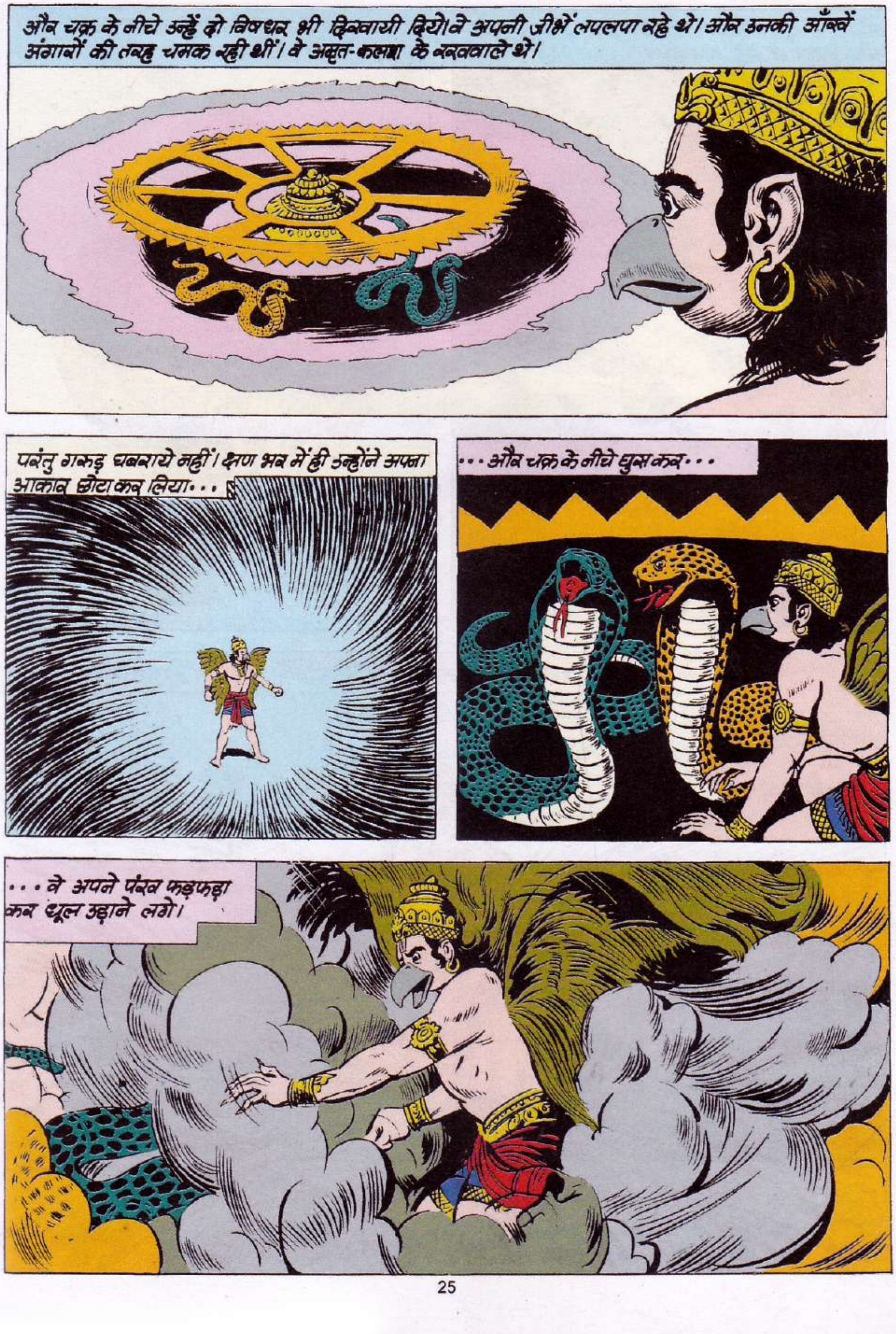

आकार बदलने की अपनी शक्ति से उन्होंने नब्बे के नब्बे-गुना मुख धारण किये और . . .


. . . उनमें अनेक नदियों का जल भर कर . . .

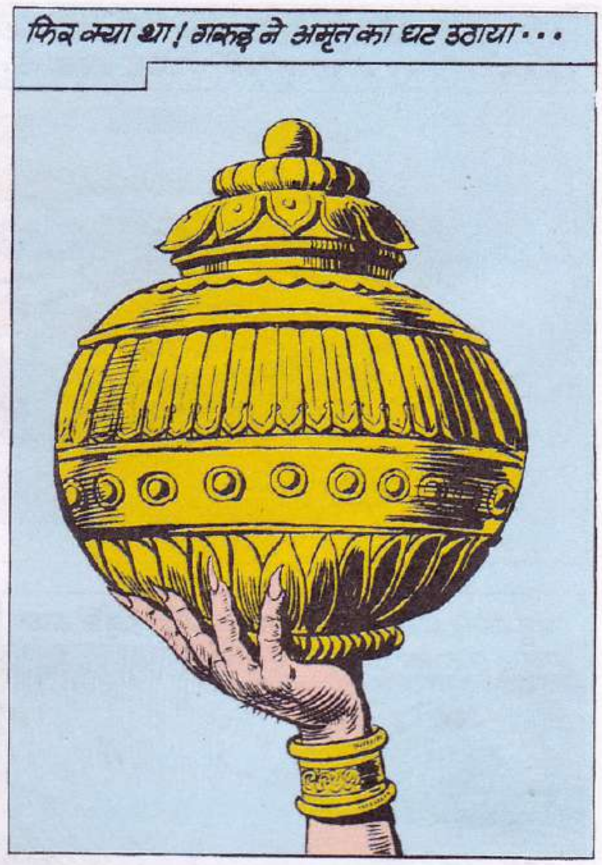

• • • अग्नि पर उँडेल दिया।


आग बुझ गयी और वे विजय की हुंकार के साथ धुएँ के बादल में घुस गये • • •


• • • परंतु उन्हें रुक जाना पड़ा। पैने दाँतों वाला फ़ौलाद का बड़ा-सा चक्र अमृत-कलश के चारों ओर घूम रहा था।

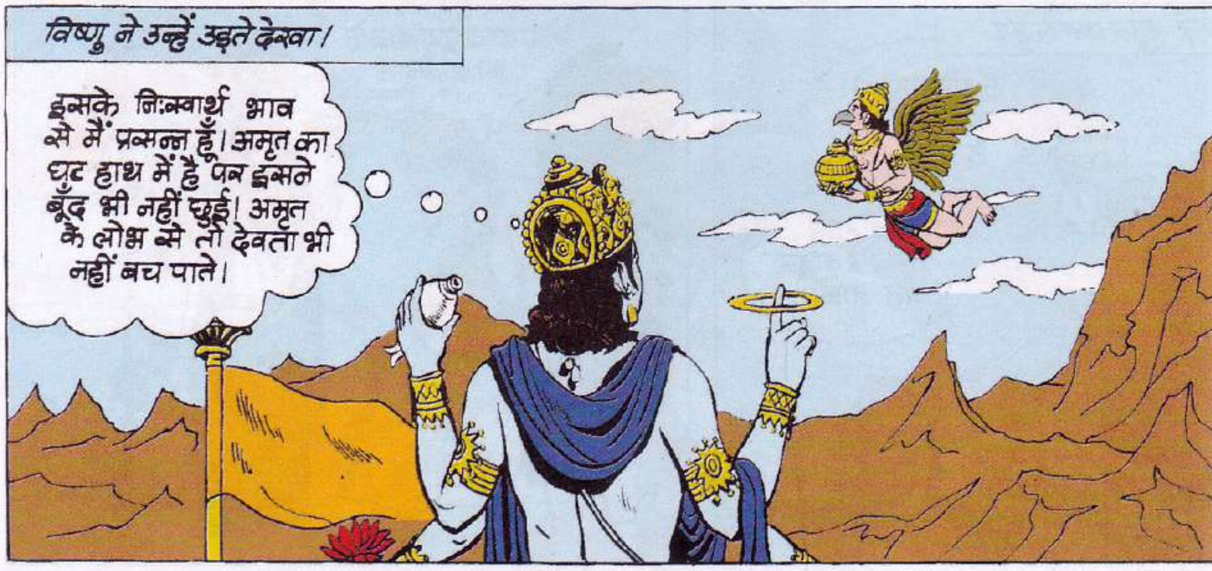

और चक्र के नीचे उन्हें दो विषधर भी दिखायी दिये। वे अपनी जीभें लपलपा रहे थे। और उनकी आँखें अंगारों की तरह चमक रही थीं। वे अमृत-कलश के रखवाले थे।
परंतु गरुड़ घबराये नहीं। क्षण भर में ही उन्होंने अपना आकार छोटा कर लिया...
...और चक्र के नीचे घुस कर...
...वे अपने पंख फड़फड़ा कर धूल उड़ाने लगे।


आँखों में धूल पड़ने से विषधर अंधे-जैसे हो गये और गरुड़ ने उन्हें मार डाला।


फिर क्या था! गरुड़ ने अमृत का घट उठाया...


...और अपना आकार बढ़ाने लगे। चक्र उनका बल झेल नहीं सका और चूर-चूर हो गया।

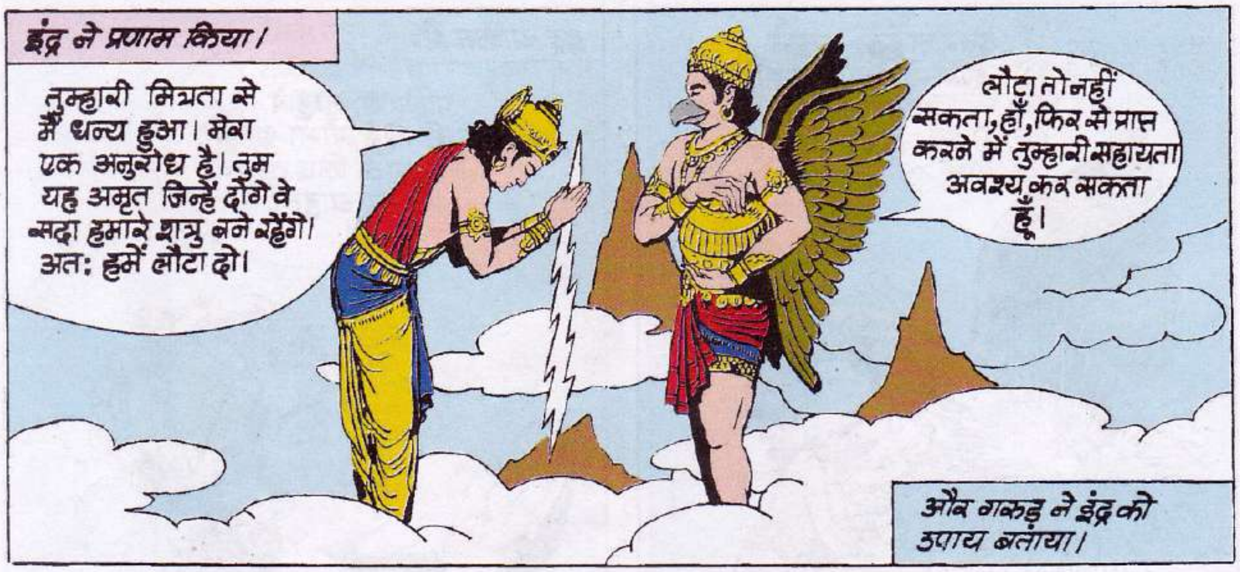

वे विजय की हुंकार कर के फिर उड़ चले।


विष्णु ने उन्हें उड़ते देखा।
इसके निःस्वार्थ भाव से मैं प्रसन्न हूँ। अमृत का घट हाथ में है पर इसने बूँद भी नहीं छुई। अमृत के लोभ से तो देवता भी नहीं बच पाते।


वत्स, मैं तुम्हें दो वर देता हूँ। माँगो।
तो मुझे आपसे ऊपर स्थान मिले और मैं अजर-अमर हो जाऊँ।


तथास्तु! आओ, मेरे ध्वज-दंड पर बैठो।
गरुड़ जैसे ही दंड पर बैठे—
मुझसे ऊपर तुम्हारा यह स्थान है।
गरुड़ बहुत प्रसन्न हुए।
मैं भी आपको एक वर देता हूँ —
तो, वीरवर, तुम मेरे वाहन बन जाओ।
मेरा कार्य पूरा करके आ जाऊँगा।
विष्णु से विदा ले कर गरुड़ आगे बढ़े। इतने में इंद्र वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने गरुड़ पर विद्युत से प्रहार किया।


देवराज इंद्र, तुम्हारे शस्त्र से मेरा बाल भी बाँका नहीं हुआ।
इंद्र चकित थे।
पक्षिराज, तुम्हारे बल की कोई सीमा भी है? मैं सदा के लिए तुम्हारी मित्रता चाहता हूँ।
तुम्हारी इच्छा है तो हम आज से मित्र हुए। अब तुम्हें बताता हूँ कि मुझमें कितना बल है।
पर्वतों, जंगलों और सागरों सहित सारी पृथ्वी को और तुम्हें अपने एक पर के ऊपर धारण कर सकता हूँ। चल तथा अचल पदार्थों सहित सारे लोकों को उठा कर ले जाऊँ तो भी मैं थकूँगा नहीं।


इंद्र ने प्रणाम किया।
तुम्हारी मित्रता से मैं धन्य हुआ। मेरा एक अनुरोध है। तुम यह अमृत जिन्हें दोगे वे सदा हमारे शत्रु बने रहेंगे। अतः हमें लौटा दो।
लौटा तो नहीं सकता, हाँ, फिर से प्राप्त करने में तुम्हारी सहायता अवश्य कर सकता हूँ।
और गरुड़ ने इंद्र को उपाय बताया।


इंद्र प्रसन्न हो गये।
तुम मुझसे मनचाहा वर माँग लो।
कद्रु के दुष्ट पुत्रों के कारण ही तो मेरी माँ को दासी बनना पड़ा था।


तो आज से सर्प मेरा भोजन हों।
तथास्तु, मित्र।

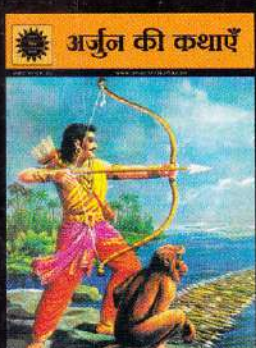

इंद्र से विदा हो कर गरुड़ घर पहुँचे।
यह रहा तुम्हारा अमृत। मैं इसे कुशा पर रखता हूँ। नित्य-कर्म कर के इसका पान कर लेना।
तुम्हारा कहा मैंने कर दिया। मेरी माता को इसी क्षण दासता से मुक्त करो।
तुम्हारी माता को मुक्त किया। हम अभी आते हैं। तुम जाओ।
सर्प नित्य-कर्म करने चल दिये।
उनके जाते ही, गरुड़ की सलाह के अनुसार, इंद्र आये और अमृत-घट उठा ले गये।
विनता को उसी समय से सदा के लिए दासता से मुक्ति मिल गयी।

महाकाव्य और
पौराणिक कथाएँ

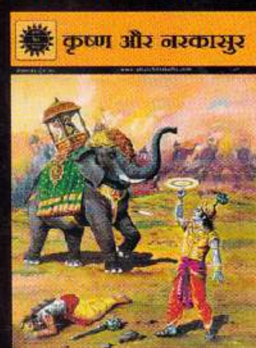
गरुड़

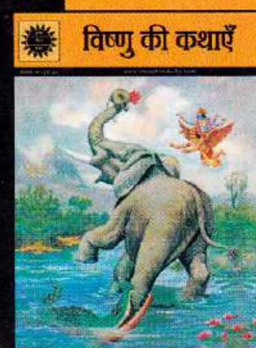
भारत में प्राचीन काल से पेड़ों और पक्षियों की भी पूजा होती रही है। पौराणिक गाथाओं में गरुड़ का उल्लेख मिलता है। मान्यता के अनुसार गरुड़ द्रविड़ मूल के देवता हैं। वैष्णव मंदिरों में देव मूर्ति के सामने पत्थर के ध्वज स्तंभ पर गरुड़ की मूर्ति बनी रहती है। गरुड़ को भगवान विष्णु का अनन्य भक्त माना जाता है इसलिए अधिकांश वैष्णव मंदिरों में गरुड़ की मूर्ति प्रायः मनुष्य के रूप में स्थापित की जाती है। परन्तु सांप उनका प्रिय भोजन माना जाता है। महाभारत के आदि पर्व में बताया गया है कि सांपों की माता, कद्रु और गरुड़ की माता, विनता को एक - दूसरे से बड़ी ईर्ष्या थी। इसी कारण गरुड़ सांप खाने लगे। भारतीय इतिहास के स्वर्ण युग गुप्त काल में राजकीय ध्वज पर गरुड़ का चित्र हुआ करता था। यह भगवान विष्णु की महिमा है कि जन्मजात शत्रु गरुड़ और शेष दोनों ही उनकी सेवा में लगे हैं। शेष पर वे शयन करते और गरुड़ उनका वाहन है।

अमर चित्र कथा के अन्य महाकाव्य (वीर गाथाएं) और पौराणिक कथा :

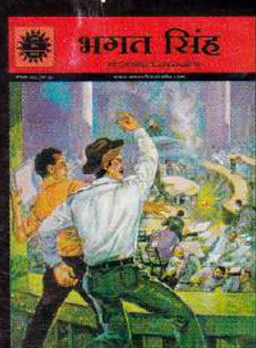




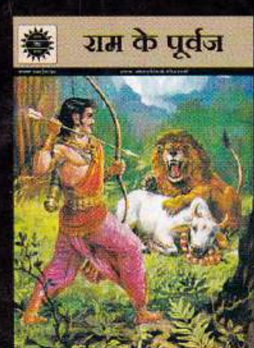




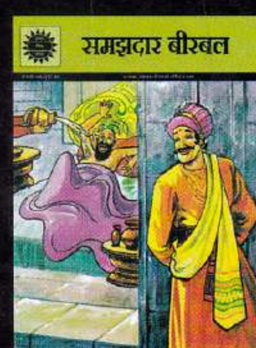
ये भी पढ़ें :



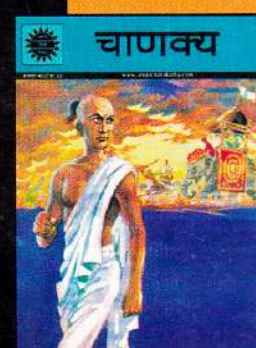
वीरांगना



भारतीय उत्कृष्ट साहित्य



हास-परिहास और दंतकथाएँ



दिव्यदृष्टा

Buy online at www.amarchitrakatha.com

ISBN 978-81-8482-328-8

The Variety Book Depot
M3 , Connaught Place, (Middle Circle),
New Delhi 110001

Tel: +91 1123417175/2567/5030
Fax: +91 11 2341 5335
Email: varietybookdepot@gmail.com